कला, वाणिज्य महाविद्यालय वडूज

मांडवे अश्विनी वाल्मिक

कक्षा - बी. ए. भाग - III

विषय - हिंदी / रोल नं. 541

मार्गदर्शक शिक्षक :- साबळे बी.टी

प्रोजेक्ट का नाम :-

'दोहरा अभिशाप' नामक आत्मकथा उपन्यास में चित्रित देवेंद्र कुमार बैंसन्ती -चरित्र का विवेचन

2018-19

8/10

A-1

Scanned with CamScanner

Page No.

Date :

प्रस्तावना

कथानक संगठन का प्रमुख उद्देश्य पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन करना होता है। उपन्यासकार अपनी अनुभूति के आधारपर चरित्र-सृष्टि अंकित करता है। पात्रों के राग, विराग, संघर्ष, दया, कर्मठता तथा संवेदनशीलता आदि स्वभाविक गुणों का तथा हिंसा, क्रूरता, कृतघ्नता, अनुदारता आदि दुर्गुणों का चित्रण यथार्थ के धरातलपर करता है।

कौशल्या बैसंत्री का 'दोहरा अभिशाप' दलित जिवन को अभिव्यक्त करने में सफल हुआ है। इसमें पात्रों की बहुलता है। कौसल्या जी ने कुल-मिलाकर पाच छह चरित्रों का सम्पूर्ण परिचय पाठकों से कराया है। परंतू अन्य जितने भी गौण पात्र हैं वे अपने परिवेश, तथा अपने समाज का प्रतिनिधित्व करने कथा में अत्यंत सफल अत्यंत सफल हुआ है। लेखिका के यथार्थ जीवन की भावभूमि पर साकार हुआ इस उपन्यास में चरित्र-सृष्टी सशक्त रूप में प्रस्तुत हुई है। कौशल्या जी ने अपने भोगे हुए यथार्थ को आत्मकथात्मक उपन्यास के रूप में पाठकों के सामने रखा है। उन्होंने व्यक्तिवाद स्तरपर अन्य चरित्रों के आंतरिक द्वंद्वों का सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन किया है।

Scanned with CamScanner

Page No.

Date :

देवेंद्र का परिचय

देवेंद्रकुमार बैसंत्री लेखिका कौसल्या जी के पति हैं। वे बिहारी के खड़िया नामक गाँव के निवासी थे। उनके माता पिता की मृत्यु हुई थी। उनकी दो छोटी बहने तथा एक भाई था। माँ-बाप ने बचपन में ही देवेंद्र की शादी कर दी थी। उसकी पत्नी हमेशा बिमार रहती थी। उसे दो-तीन बच्चे भी हुए परंतु वे जिवित नही रहे। वह दूसरी शादी करना चाहता था। खुद उच्चशिक्षित था इसलिए पढी-लिखी पत्नी चाहता था। एक अधिवेशन में देवेंद्र का परिचय कौसल्या से हुआ था परंतु उस वक्त दोनों को भी खयाल नहीं आया था कि दोनों की शादी होगी। परिचय के बहुत दिनो बाद दोनों ने शादी करने का इरादा किया और रजिस्टर पद्धति से दोनों का विवाह संपन्न हुआ।

colors

सुशिक्षित एवं उच्चविद्याविभूषित

देवेंद्रकुमार एम.ए. एल.एल.बी. करके बनारस विश्वविद्यालय में डि.लिट. के लिए रिसर्च कर रहा था। देवेंद्र कानपुर से निकलने वाले हिंदी अखबार 'सावधान' और मद्रास से निकलने वाले अंग्रेजी अखबार में लिख लिखता था। वह एम.एन. राय की रेडिकल डेमाक्रेटिक पार्टी में भी रहा। युवावस्था में वह बिहारी के किसानों के आंदोलन में सक्रिय रहा था और जेल भी गया था। वह यू.पी. शेड्यूलकास्ट फेडरेशन का अध्यक्ष था। इसप्रकार देवेंद्र उच्चविद्याविभूषित बहुआयामी व्यक्तित्व रहा है।

Page No.

Date :

पत्नी का शोषण करनेवाला

सुशिक्षित देवेंद्र पत्नी का हर तरह से शोषण करता हुआ दिखाई देता है। शादी के पहले कौशल्या से उसका व्यवहार मित्रवत, सहयोगपूर्ण रहा है। परंतु शादी के बाद उसमें पुरुषी अहं जागने लगता है। अपने ही घर में रहनेवाला देवेंद्र गृहस्थी चलाने में पत्नी से सलाह-मशवरा नहीं करता। पत्नी की इच्छा, भावना खुशी की कभी कद्र नहीं करता। बात-बात पर पत्नी को गंदी-गंदी गाली देता और हात उठाता है। बडे क्रुर तरीके से पत्नी को मारता भी था। गर्म मिजाज और जिद्दी देवेंद्र अपने मुँह से कहता है कि 'मै बहुत शैतान आदमी हुँ।' उनकी बहनों से पता चलता है कि वह माँ-बाप तथा पहली पत्नी को भी मारता था। देवेंद्र कुमार के सामने उनकी बहनें भी खडी भी नहीं होती थी। उसके जीवन में पत्नी का स्थान बहुत नीचा था। लोखिका के शब्दों में, देवेंद्र कुमार के सामने ~~उनकी बहनें भी खडी न~~ लोखिका के शब्दो में, देवेंद्र कुमार को पत्नी सिर्फ खाना बनाने और उसकी शारीरिक भूख मिटाने के लिया चाहिया थी। वह घर खर्च के लिया पूरे पैसे नही देता था। पैसे अपनी अलमारी में ताले में बंद रखता है और रोज दूध और सब्जी के लिया गिनकर पैसे देता था। पैसे देन की बात आती

Scanned with CamScanner

Page No.　　　　Date :

तब कुछ न कुछ कारण निकालकर झगड़ा करता। मारने दौड़ता। पत्नी कौसल्या उसके अत्याचार, शोषण से तंग आ गई थी।

उच्च ओहदे पर कार्यरत :

उच्चशिक्षित देवेंद्र को पहली नौकरी लेबर इन्सपेक्टर की मिली। यह पोस्ट भारत सरकार की थी और राजपत्रित थी। कुछ महिनों बाद देवेंद्र ने यह नौकरी छोड दी कारण भारत सरकार के सूचना और प्रसार विभाग में असिस्टंट रिसर्च ऑफिसर के पद पर उनकी नियुक्ति हो गई। वे पत्नी और बच्चों के साथ दिल्ली में रहने लगे। ~~दिल्ली~~ में आठ वर्ष रहने के बाद उनका तबादला भोपाल हो गया। वहाँ से देवेंद्रकुमार पंचवर्षीय योजना के प्रसार-प्रचार के लिए पूरे मध्य प्रदेश के लिए नियुक्ति हो गये।

colors

Scanned with CamScanner

संशयी प्रकृति

देवेंद्र शकी और संदेही प्रकृति का आदमी था। उसमे अपना पतिधर्म कभी नहीं निभाया। उल्टा जमरी की छोटी-छोटी बातों मे पत्नी पर संदेह करता था। किसी भी बात पर उसे पत्नी पर विश्वास नहीं था। लेखिका के शब्दों में, वह साबुन भी अपनी अलमारी बंद रखता, चीनी भी बंद, थोडी-थोडी रोज लडके के लिए, चाय के लिए एक कटोरी में रखता था। अब खुद राशन, दूध-सब्जी आदि लाता। पकाने के लिए सब्जी टेबल पर निकालकर रखता था। मैं खाना बन जाने पर खा लेती थी। तब उसने यह शिकायत मेरे भाई से की कि मैं उससे पहले खाना खा लेती हूँ।" इस प्रकार अपनी पत्नी पर संदेश करनेवाला शकी आदमी था।

पत्नी को दासी के रूप में देखने की वृत्ति

एक सामाजिक कार्यकर्ता होकर भी देवेंद्र अपनी पत्नी को दासी के रूप में देखता था। उच्चशिक्षित पत्नी का अनादर करता था। रोज अपमानित रूप से पत्नी का हाल करता था। घर खर्च के लिए पत्नी को पैसे नही देता। लेखिका के शब्दों में 'बहुत लड़-झगड़कर उसने मुझे चालीस रुपये महीने देना शुरु किया। जब देवेंद्र कुमार अपने गाँव बिहारी जाता, तब एक कागज पर इतने पैसे दूध के इतने सब्जी, इतने राशन के और चालीस रुपये तुम्हारी पगार लिखकर रख देता, जैसे मैं वहाँ इनके घर की नौकरानी हूँ। घर का सारा काम करने पर भी पत्नी की प्रशंसा नही करता था। कुछ महिनों बाद तो उसने चालीस रुपये देना भी बंद किया। घर की नौकरानी को भी बंद किया। लेखिका लिखती है, 'नौकरानी कपड़े धोती थी, उसे भी देवेंद्र ने छुड़वा दिया। मुझसे कहता कि मैंने तुम्हे पालने का हक नही लिया है। मैंने कहा, शादी के बाद पत्नी को पालने की जिम्मेवारी पति होती है। मैं भी यहाँ मुफ्त में तो नहीं खाती। यहाँ काम करती हूँ। तब कहता, " बाहर जाकर काम और खाओ करो और खाओ।

Scanned with CamScanner

पत्नी को वह स्वतंत्रता सेनानी भी दासी के रूप में ही देखना चाहता था। इस प्रकार देवेंद्र की मानसिकता दोहरे मापदंड की थी।

Scanned with CamScanner

सरकार से देवेंद्र के कार्य की प्रशंसा

उच्चविद्याविभूषित देवेंद्र डॉ. आंबेडकर जी के विचारों से प्रभावी होकर उनके दलित आंदोलन से जुडा था। सामाजिक कार्य में रुचि के कारण अनेक संगठनों में काम करता था। सरकारी कार्यक्रमों में निमंत्रित किया जाता था। किसानों के आंदोलनों में भी वह सक्रिय रहा है। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भी उसने कार्य किया है। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भी उसने कार्य किया है। इन कार्यों के लिए देवेंद्र को स्वतंत्रता सेनानी का ताम्रपत्र मिला और पेंशन भी मिलती है। सरकार ने उसके कार्य की प्रशंसा की थी।

A-1

Scanned with CamScanner